SHRI JASWANT SINGH: Madam, I move: *"That the Bill be returned." The question was put and the motion was adopted.* [MR. CHAIRMAN in the Chair.]

FAREWELL TO RETIRING MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, today we bid farewell to some of our colleagues who are retiring at different points of time in the next three months after completion of their term of office. I am sure, some of the retiring members would get re-elected. We in the House will certainly miss those who are not returning.

As a Presiding Officer, I shall certainly miss the passion of their arguments and the liveliness of their speeches. At times, I had to face their high temper and annoyance, but, I also appreciate their sense of humour and courtesy that they had always shown towards me.

The membership of Rajya Sabha is in itself a great honour, may, I say, an intensely political experience. Many of the retiring Members are veterans who had mastered the art of debate and even while making digs at political opponents, have consistently maintained dignity and decency. I believe that decorous debate is the finest form of communication as it removes misunderstanding and ensures common good transcending political and ideological barriers.

I am sure, the retiring Members will cherish their association with this House and the camaraderie with which we all worked together in the House.

I place on record my heartfelt appreciation of the valuable contributions the retiring Members have made to the deliberations of the House, and the service they have rendered to Parliamentary democracy. Personally, I am grateful for the. consideration they have always shown to me in conducting the business of the House. I wish them good health, happiness, success and long years of service to the nation. The House shall ever remember their association.

DR. (SHRIMATI) NAJMA HEPTULLA (Maharashtra): Sir, always the procedure is that the Leaders speak and the Members respond. Sir, as you

have just now mentioned, some of us are retiring at different points of time. I do not know whether I should speak as a Deputy Chairman first or as a retiring Member in July, or, should I just confine myself in bidding farewell to those Members who are retiring, whose names are with me today. And, then, if the Minister of Parliamentary Affairs and the Leader of the House informs us, at the moment, as to when we are going to have the elections because it is only then we will know when we are going to have the next session, maybe, we will have another opportunity to say goodbye to this House.

After every two years in the history of Rajya Sabha a new wave comes, the change comes, the new Members come and the old Members go, a few old Members remain over here and they continue. So, some of them retire and some of them return. And, I feel this is the strength of the Rajya Sabha, and the peculiarity of our democratic polity that this House is a permanent House. I can understand the feeling of the Lok Sabha Members for whom this would be, perhaps, a testing point because they are going in for elections. But, for us, it is a continuity, and still we continue to do our good work with the renewed vigorousness and commitment. Sir, some of the Members who are retiring or rather most of them, I know them personally. Some of them have been here for two terms, three terms; some have come just for one term. But, in this House, whether they come for one term or they come for two terms, we all become friends. And, many, many times, I have stood over here in this seat and bade them farewell with a very heavy heart. I know, when one sits on the Chair, it is a tiring job. It is not a very coveted job to perform. But, still, I did not mind it at all these years, because I enjoyed the pleasure of the House and the cooperation of the Members. I hardly ever took part in the discussion. I listened to everything. It has been a very enriching knowledge for me to hear the various speeches made from the different angles and the political colours and ideologies. But I always said, Sir, that the Presiding Officer is like a referee. It is a game which is being played in this House every day. We are there to see that the game is played properly, and everybody gets a chance. And, we definitely would not like to be a part for kicking a football at the goal for somebody else. And, that is what has made me to survive for so many years. I do not want to take the names of all the Members who ase retiring. Sir, we all know them. But we will miss all of them, and we hope and, at least, I hope and pray that most of you will come back to this House because, you have made the working of this House extremely enriching and interesting. We had difficult moments, we had peaceful

6.00 P.M.

moments, and we had happy moments. Both today and yesterday have been the most interesting days of this Session because, throughout, when I presided, I was cheerful, because, somehow, the debates were made in a good spirit. Most of the Members were in a very good mood, and made very good contributions in a good atmosphere.

AN HON. MEMBER: It is because of feel good, Madam.

DR. (SHRIMATI) NAJMA HEPTULLA: I really felt good over there. So, thank you very much. I do not know whether it is the economy about which one feels good or not, or, whether it is the atmosphere about which one feels good or not, but I definitely felt good sitting in the Chair, yesterday, today and before. Thank you very much.

श्री सुरेश पचौरी (**मध्य प्रदेश**) : परम आदरणीय सभापति महोदय , क्योंकि डा0 मनमोहन सिंह जी आज इस सदन में अपरिहार्य कारणों मे उपस्थित नहीं है इसलिए उनकी अनुपस्थिति मे मुझे उनके निर्देशनुसार अपने कर्तव्य का पालन करना पड़ रहा है । मान्यवर , राज्य सभा मे हर दो वर्ष के अंतराल के बाद ऐसा समय आता है कि जब हमे कुछ साथियों की विदाई देनी पड़ती है । जब कोई सदन में आता है तो वे क्षण बहुत हर्ष और उल्लास भरे क्षण होते है और जब विदाई होती है तो वे बड़े भावुक और दुखदायी क्षण हुआ करते हैं । आज इस सदन से 22 सदस्यों की विदाई होने जा रही है जब कि इस सत्र में हमने 22 घंटे से ज्यादा समय बहुत महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करने मे बिताया है । मान्यवर , मुझे विश्वास है कि इनमें से हमारे कुछ सम्मनित सदस्य वापिस आएंगे और जो नहीं आ पाएंगे उन्होंने सदन में जो ज्ञान अर्जित किया है , जो अनुभव प्राप्त किया है ,उसका लाभ जनसेवा के जरिए इस राष्ट्र को देगे । उनका राज्य सभा का कार्यकाल तो यद्यपि समाप्त हो रहा है लेकिन एक ऐसा समय उनके जीवन मे जरूर रहेगा कि इस संसदीय प्रतिभा का लाभ वे देश सेवा मे और समाज सेवा में जरूर देते रहेगे । इसी सदन के एक सदस्य बैरागी जी ने पिछले समय 22 मार्च 2002 को कुछ पंक्तिया कहीं थीं , उनमें कुछ तबदीली करके मैं कहना चाहता हूं कि

इस लोकतंत्र के मदिंर से, जो लौट रहे हैं जन प्रागण में,
वे सफल रहे, सानन्द रहे , जीवन के व्यस्त रणगण मे ।

मान्यवर , जिनका कार्यकाल समाप्त हो रहा है , निः सदेंह उनकी अनुपस्थिति हमे बहुत खलेगी । कुछ बहुत अनुभवी सदस्य है , कुछ बहुत वरिष्ठ सदस्य हैं । मैं उल्लेख करना चाहूंगा कि उन्होंने जो योगदान इस सदन मे समय समय पर दिया है ,निश्चित रूप से यह सदन उसे याद करता रहेगा । चाहे वह एम. वकैया नायडु जी रहे हो , चाहे एस आर बोम्मई जी रहे , चाहे ओस्कर फर्नाडिस रहे हो, हमारे जवारे गौडा जी रहे हो या अन्य सदस्य रहे हो, समय समय पर जब भी वे आए , उन्होंने अपनी उपस्थिति का अहसास कराया । जो अनुभवी रहे, उन्होंनेअपने अनुभव का यहां अहसास कराया । हमारे जो नौजवान सदस्य रहे, भाई अश्विनी कुमार जी जैसे, उन्होंने अपनी ऊर्जा का इस सदन से हमे अहसास कराया है । निश्चित रूप से हमे उनकी याद आती

रहेगी । जो पुराने होते हैं – जैसे कहा जाता है कि जो पुराना मधु होता है , जो पुराने मित्र होते हैं , जो पुरानी मदिंरा होती है, उसमें कुछ बात ही अलग होती है और वे अच्छे जाने जाते हैं, हमे विश्वास है कि ऐसे पुराने लोग , ऐसे वरिष्ठ लोग, चाहे वेकैया नायडु जी जैसे लोग रहे हो , चाहे बोम्मई जी जैसे लोग रहे हो , वे निश्चित रूप से इस सदन मे वापिस आंएगे । आप सबका जो साथ है , वह पुष्प मे गधं और सीप में मोती की तरह रहा है । अत आपकी स्मृतिया जल मे शीतलता, धूप मे उष्णता और प्रकाश मे पवित्रता की तरह निरंतर ह्रदय मे समाती रहेंगी । जो विदा केक्षण होते है , जैसा मान्यवर मैंने पहले भी कहा कि बहुत भावुक क्षण होते हैं और बड़े विचलित करने वाले क्षण होते हैं । मै कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दो में उनके बारे मे कुछ कहना चाहता हूं कि

विदा कहते रुकती है जबान , कैसे कह दू कि तुम यहीं रहो ।

मान्यवर, परन्तु यह सभंव नहीं है । यह संभव इसलिए नहीं लगता है कि सभी के सभी सदस्य प्राय : लौटकर नहीं आया करते हैं लेकिन कुछ ही आया करते हैं । जो आए उनके उज्जवल भविष्य की हम अपनी पार्टी की तरफ से कामना करते है । जो न आए, वे जिस क्षेत्र मे रहे , वहां उन्हें ईश्वर कामयाबी दे , उसके लिए हम शुभकामनांए देते हैं, इन शब्दो के साथ कि

समूचा सदन यह दुआए दे रहा है आज,
आप जहा भी रहे , खुश रहे , सलामत रहे ।

धन्यवाद ।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : सभापति जी , राज्य सभा का यह सदन एक निरतंर बहने वाली नदी के समान है जहां एक – तिहाई सांसद साथी आते – जाते रहते हैं लेकिन सदन का प्रवाह रुकता नहीं है । इसलिए इसे एक जीवन्त सदन की सज्ञा दी गई है । आज जो सूची हमारे हाथ में थमाई गई , उसमे मैं नाम पढ़ रही थी । मुझे नहीं मालूम नजमा आपा ने क्यो अपने आपको उसमे शामिल किया । जून से पहले , जुलाई से पहले तो दोबारा सत्र मिलेगा । इसलिए आज हम केवल

श्री सभापति : ये तो करना भी नहीं चाहतीं पता नहीं क्यो बोल गई ?

श्रीमती सुषमा स्वराज : इसलिए आज हम केवल अप्रैल मे विदा हो रहे अपने साथियों को विदाइ दे रहे है । इसी सूची में ऐसे बाईस नाम है । अगर मैं चाहूं तो एक – एक व्यक्ति के बारे मे बहुत कुछ कह सकती हूं क्योंकि संसदीय मंत्री के नाते सबसे मेरा व्यक्तिगत सम्पर्क आया है लेकिन उससे बात काफी लंबी हो जाएगी , तो भी कुछ लोगो का उल्लेख जरूर करना चाहूंगी । आपने राष्ट्रीय अध्यक्ष से शुरू करने के बजाय अगर उधर के बैचों से शुरू करूं तो सबसे पहले मुझे ओस्कर फ़र्नांडिस दिख रहे हैं जिनसे इस वर्ष मे मुझे एक अलग हैसियत से काम करने का मौका मिला । उन्होनें पहली बार इस संसद में AIDS HIV के ऊपर एक पार्लियामेटरी फोरम का गठन किया । विश्व भर म उसकी सराहना हुई । राजनैतिक दलो पर ऊपर उठकर हम इस तरह के मुद्दो पर एक हो सकते है । उस पार्लियामेटरी फोरम को प्रधान मंत्री जी और विपक्ष की नेता , दोनो ने सम्बोधित किया । आप स्वयं उसमे उपस्थित हुए । एक बहुत बड़ा काम अभियान के तौर पर सांसदों के रूप मे जो लिया गया , उसके लिए मैं व्यक्तिगत रूप से ओस्कर फर्नाडिस को बधाई देना चाहूंगी

जहां तक हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष का सवाल है , पहले एक सहयोगी के नाते और अब वे हमारे अध्यक्ष है , इस नाते से उनके साथ काम करने का, एक सहयोगिनी के तौर पर , एक कार्यकर्त्री के रूप में मुझे मौका मिला है । मुझे नहीं लगता कि हम सदन मे उन्हे खोएंगे । वे निश्चित तौर पर वापस इस सदन मे आएगे , इस सदन की शोभा बढ़ाएगे और अपना योगदान उन विषयो पर देगे लेकिन चूकि अभी अप्रैल मे जा रहे हैं , इसलिए मै अभी विदाई दे रही हूं , उन्हे वापस बधाई भी देने का काम करूंगी ।

डा0 दसारी नारायण राव जी से मेरा सम्पर्क आई एड बी मिनिस्टर के तौर पर आया। एक बहुत बड़े फिल्म प्रोड्यूसर के तौर पर उनको मैंने देखा और किस तरह उन्होंने हिदुस्तान के सिने जगत मे अपनी एक धाक जमाई है उसमे मुंझे उनके साथ काम करने का मौका मिला । जैसा मैंने कहा कि मैं कह तो बहुत लोगों के लिए सकती हूं लेकिन समय की कमी के कारण मैं सभी को एक साथ यहा से विदा करते समय यह कहना चाहूंगी कि इस सदन का अनुभव हमे हमारे जन – सम्पर्क मे भी बहुत काम आता है । यह अनुभवी लोगो का सदन है । मुझे दोनों सदनो मे रहने का और काम करने का मौका मिला है सभापति जी लेकिन मै बेसाख्ता यह बात कह सकती हूं कि जो स्तर बहस का हमे इस सदन मे दिखाई देता है , उसमे उस अनुभव का पुट होता है । इसलिए कही न कही चर्चा मे जो आनन्द हमे इस सदन में आता है , वह दूसरे सदन से कहीं ज्यादा है । जो लोग यहां आए , जिन्होने अपने अनुभव से इस सदन की डिबेट्स मे अपना योगदान दिया, उसको ऐनरिच किया , उनको हम याद करेगे । वे वापस लौटकर आए , इसके लिए शुभकामना भी देगें और इस अनुभव का लाभ वे अपने आगे की जनसेवा मे उठाए , यह शुभकामना भी देना चाहूंगी ।

जब नेता सदन श्री जसवंत सिंह जी अपनी बात रखेगे तो मैं यह चाहूंगी कि आज के दिन सभा अनिश्चित काल के लिए भी स्थगित हो रही है , इसलिए जो अत मे भाषण दिया जाता है , उससे भी अगर वे इसको एक साथ मिला दे तो फिर दो भाषण करने की आवश्यकता नहीं होगी । तो मैं आपकी अनुमति से अगर उनसे यह निवेदन करू कि वे एक विदाई भाषण भी दे और साथ मे सत्र का अतिंम भाषण भी दे तो अच्छा होगा, धन्यवाद ।

SHRI P.G. NARAYANAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, it is our duty to bid farewell to the retiring Members after completion of six years. All of them are persons of eminence. They have played an active and vital role in the proceedings of this House. They have made valuable and excellent contribution to the welfare of the society. They fought for the welfare of the downtrodden and weaker sections of the nation. We are all enriched from their contribution and performances and their association. The valuable contribution and their services will be remembered by one and all. Public life continues even after retirement. I am sure their services to the nation will continue with the same vigour and earnestness. On behalf of AIADMK Party, we will wish them good health and long life and prosperity throughout their life.

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): Sir, this is an occasion where I think I have the legitimate right to say that I am not feeling good without any contradiction from either the Leader of the House or Venkaiah Naiduji. I really don't feel good because I am sure that many of us, who are retiring today, will come back, but quite a few of them will not come back and I don't feel good because what I have learnt in these last ten years, here in this House, is because of the collective contribution of all of us and of which, the contribution by those who are retiring today, is also great. Therefore, I think it is the duty of this House that we go back with those sweet memories, but at the same time, I mean some of us stay back waiting for our own departure from this House and it is a continuous process. That is why, we can really have the continuum of these experiences, which will stand us in good stead in facing the larger problems of life and the Indian society in which everyone of us, whether we are here or outside, will continue to go through that experience. So, on behalf of our party and on my behalf, I express the best wishes to all those Members who are retiring and I am waiting with baited breath to welcome some of them back here when we meet again.

प्रो 0 राम देव भंडारी (बिहार) : माननीय सभापति जी , यह बहुत दुख का समय है जब हमारे 22 माननीय सांसद मित्र इस सदन से रिटायर हो रहे है । ऐसा समय भी आता है जब वे ओथ लेने के लिए सदन मे आते है तो हम भेजे थप–थपाकर उनका स्वागत करते हैं । प्रत्येंक दो वर्ष के बाद हमे एक तिहाई मित्रो से बिछुडना पड़ता है वे जीवन के विर्भिन्न क्षेत्रो का अनुभव लेकर यहा आते हैं , सदन को अपनी सेवाएं देते हैं , जब वे यहां से जाते है तो एक और बड़ा अनुभव साथ लेकर जाते हैं । मैं अपनी पार्टी की ओर से , अपने नेता श्री लालू प्रसाद जी , जो अभी यहां नहीं है , उनकी ओर से उन माननीय सदस्यों को शुभकामनाए देता हूं । मैं आशा करता हूं कि के पुनः सदन मे वापस आए और सदन को अपनी सेवाए दे । जो सदस्य सदन मे वापस नहीं भी आ पाए तो वे देश के विभिन्न क्षेत्रों मे अपने अनुभवों का , सदन के अनुभवों का जनता को लाभ दे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार पुनः सभी को शुभकामना देता हूं ।

SHRI MANOJ BHATTACHARYA (West Bengal) : Sir, it is really a touching moment when 22 friends of ours who have worked along with us, who have made valuable contribution for running this House are retiring. I, on behalf of my party, the Revolutionary Socialist Party, wish them all the best and I wish all of them to come back to this House and continue to do work for the best interest of this country.

Even though I understand that they are retiring from this House, from Rajya Sabha, they will be continuing to contribute their might for the people of this country, for the common people, poor people of this country,

and, they will be enriching us even from outside even though they are not coming to this House again.

With these few words, I, once again, bid good-bye to them, and, wish them all the best. Thank you.

SHRI M.J. VARKEY MATTATHIL (Kerala): Mr. Chairman, Sir, perhaps I am the person who have spoken the least for the last two years reason being I am not used to shouting, yelling and coming to the well and all that. But, at the same time, for the last six years, the wonderful experience that I had in this House has taught me a lesson. I have spent ten per cent of my life in this House. For the first four years, I used to speak for the people of Kerala, as well as for the people of India regarding agriculture, trains, etc. In 1998 when Shri Nitish Kumar was the Railway Minister, the State of Kerala was allotted Rs. 48 crores. I alongwith the MPs from Kerala met Shri Nitish Kumar, and, he gave Rs. 98 crores to Kerala. Later, when Shri O. Rajagopal became the Minister of State for Railways, he also did the maximum for the State of Kerala for the railways. Today the trains are running on time. I appreciate that certain things have happened. People have really done something for the State of Kerala. Trains are running on time, and, everything is going on smoothly. I would like to express my thanks to Shri Nitish Kumar, Shri Rajnath Singh and all the Ministers together. You have done wonderful job for the State of Kerala. Coming to tourism, I am thankful to the Leader of the House, Shri Jaswant Singhji for his generosity. We require more, no doubt. We are a democratic country. Mr. Chairman, Sir, I will take two minutes. I remember while I was in college in USA in i960, I wrote to my teacher that I can stay out tin mid night here, so the freedom is here. My teacher wrote to me that freedom is to be enjoyed and not to be abused.

So, it is my message here that India is a big country, we are free here, and, unless and until we go out of the country, we do not realise, we do not appreciate the freedom that we have in this country. So, this country is a great country. I had the opportunity to serve in this House. Each and everyone here is nice, and, all I can contribute is my smile, and, that is my asset. So, I wish you all the best. My address is there; whenever you come to Kerala, please ring me up. I am not a professional politician. I am a businessman. I am a planter. That is why I speak for planters and for the welfare of the people. We are here to serve the people, and, not any party. Party has no mind, *no* soul, no religion, and.

no caste. Mr. Chairman. Sir, I once again thank you very much.

SHRI FALI S. NARIMAN (Nominated): Mr. Chairman. Sir. I thank you for this opportunity, on behalf of Nominated Members of the Rajya Sabha. to say a few words because parting is always sweet sorrow. I think. I know the attitude of all the 22 members who are departing this term, and, I am sure that they feel the same way that I feel in this House. It is an amazing sense of camaraderie; speaking for myself, and, I speak for them as well. They have been associated with this House. I think, whichever walk of life you come from, once you get into this House, you feel that you are experiencing the microcosm of a nation, and that is what I personally think is the greatest benefit that each one of us owes to the country and to ourselves by merely being here in this House whether we participate as speakers or participate as listeners. Therefore, to each one of them, I say a farewell and hope to see you again in this House and certainly in the country. Thank you.

श्री बालकवि बैरागी (**मध्य प्रदेश**) : माननीय सभापति महोदय , ऐसे इस अवसर पर, जबकि शब्दों से कुछ भावकुता की बात हो रही है , सुषमा जी की बात – चीत ने थोड़ी सी मुझे राहत दी है कि इस समूह में मैं अभी शामिल नहीं हूं । मैं जून में इसमें शामिल हो जाऊंगा । ऐसा हम लोगों के लिए कहा है । यह एक संयोग है या दुर्योग है , लेकिन 22 लोग रिटायर हो रहे हैं । इससे पहले की मैं अपनी कविता की दस पंक्तियां पढ़ूं , उसके पहले आपका आशीर्वाद ले करके 22 लोग जो रिटायर हो रहे हैं , उससे ऐसा लगता है कि जैसे कोई हम इस सदन की तरफ से किकेट की दो टीमें विदा कर रहे हैं कि जाओं , खेल कर वापस आ जाना। 22 लोग रिटायर हो रहे हैं। उन सब लोगों को , हमारे मित्रों को , वाकई हम लोग अभी दो –चार महीने और उनको इधर – उधरा मिस करेगे । लेकिन मैं दस पंक्तियों पढ़ रहा हूं । पंक्तिया पढ़ना मुझे अच्छा लगता है इसलिए कि जब जसंवत सिंह जी रहीम के दोहे पढ़ते हैं , रविदास को पढ़ते हैं , कल रविदास जयंती है , जब ये पढ़ते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि वहां पर , रेगिस्तान में भी सिचांई होती है , अच्छी होती है और वह खुशी की बात है । जसवंत सिंह जी से कविताएं सुनना एक अलग रोमाचं है । तो मैं सब के लिए दस पंक्तियां पढ़ रहा हूं । मैं कभी किसी अपमान या कटाक्ष नहीं करता । ये ऐसे क्षण हैं कि जब हम लोग यहां बहुत प्यार – मोहब्बत की बातें करते हैं । ... (व्यवधान) ...

माननीय सभापति महोदय , पंक्तियां हैं –
लोकतत्र की महासभा का दो हिस्सो में मिलना ,
बिल्कूल एक नया अनुभव था झरकर फिर डाली पर खिलना ।
मिलना, खिलना या मुर्झाना सब मिट्टी की माया ,
पर कड़वे मीठे बोल पचाकर लोकतंत्र को गाया ।
शीत सत्र कर सरस समापित घर बंसत में जाना,,

संभावित लगता है सब को कुछ का वापस आना ।
यहां रहें या वहां रहे पर रहे सदा जन मन में ,
ससंद की सौरभ फैलाये पल प्रति पल उपवन में ।
रूप सवारें भारत माँ का सारा देश अभय हो ,
उड़ता रहे बुलद तिरंगा संविधान की जय हो ।

धन्यवाद ।

VALEDICTORY REMARKS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, the second part of the 200th Session, which commenced on Friday, the 30th January, now comes to an end. It had four sittings spread over more than 22 hours. During the four days of the sittings, important business relating to the Interim Budget (Railways) and Interim Budget (General) along with their relevant Appropriation Bills has been transacted. Also, the matter regarding need to declare the States of Jharkhand, Chhattisgarh and Uttaranchal as special category States with a view to facilitating their comprehensive development as model States, was discussed at length through a Private Member's Resolution.

Besides, the House took up further discussion on the "unemployment problem in the country" through a Short Duration Discussion raised in the earlier part of the Session. Of course, various matters of Public Importance were raised by several Members through Special Mentions. I am happy that business all through was conducted in an atmosphere of warm cordiality, harmony and understanding.

I would like to take this opportunity to thank the Leader of the House, the Leader of the Opposition, Leaders of various Parties and Groups, and all the hon. Members for the kind cooperation extended by them in conducting the proceedings of the House.

I also thank the hon. Deputy Chairman and Members on the panel of Vice-Chairmen for their cooperation, as also the Secretariat staff for their hard work.

I, once again, extend my good wishes to the retiring Members.